E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2022; 4(1): 226-229
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 04-05-2021
Accepted: 07-06-2021

रोहित कुमार मीना
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महविद्यालय, गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
रोहित कुमार मीना
सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महविद्यालय, गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर, राजस्थान, भारत

हरित विचारधाराओं तथा हरित राजनीति की विषय–वस्तु में गांधी

रोहित कुमार मीना

सारांश
हरित विचारधारा 1970 के दशक से आधुनिक राजनीतिक चिंतन का प्रमुख केंद्र बन गई है। इस विचारधारा पर उपजी राजनीति ने परंपरागत राजनीतिक विचारधाराओं की मानव केंद्रित मान्यताओं पर सवाल उठाया। इन्होंने मानव के साथ ही प्रकृति को भी उतना ही महत्वपूर्ण माना। यह विचारधारा मानव चेतना के बदलाव से माध्यम से मानव का गैर मानव के साथ संबंधों के पुनर्निर्माण पर बल देती है। गांधी ने भी अपनी जीवनशैली, विचार और लेखन में प्रकृति को मनुष्य जितना ही महत्वपूर्ण माना। गांधी मनुष्य को प्रकृति का अंग मानते थे उसका स्वामी नहीं। गांधी का सर्वोदय, अपरिग्रह, स्वराज और स्वदेशी का विचार हरित विचारधारा के समग्रतावाद,पर्यावरण सततता संबंधी विचार का ही समरूप पहलू है।
हरित विचारधाराओं के स्तर पर देखा जाए तो गांधी सामाजिक पारिस्थितिकी और गहन पारिस्थितिकी के सर्वाधिक नजदीक दिखाई देते हैं द्य गहन पारिस्थितिकी के प्रणेता अर्ने नेस ने तो स्वीकार किया कि उन्होंने पारिस्थितिकी के इस दर्शनशास्त्र को गांधी व स्पिनोजा के अध्ययन से प्रभावित होकर रचा है। हरित विचारधारा की सभी विषय वस्तु में गांधी है और हरित विचारधारा की सभी धाराओं में गांधी का प्रवाह है।

कूटशब्द: हरित विचारधारा, हरित राजनीति, गहन पारिस्थितिकी, सामाजिक पारिस्थितिकी

प्रस्तावना
'ग्रीन' (हरित) शब्द का प्रयोग पर्यावरणीय उन्मुख राजनीति के संदर्भ में प्रथम बार तब किया गया जब 19वीं सदी के अंत में संयुक्त राज्य अमेरिका में पर्यावरण संरक्षण के आंदोलनों का प्रसार हो रहा था। यह शब्द 1970 के दशक में ग्रीन पीस जैसे पर्यावरणीय संगठनों द्वारा इसके उपयोग के माध्यम से अधिक प्रमुख हो गया। 20 वीं सदी के उत्तरार्द्ध का 1970 का दशक ही हरित राजनीति के उदय का समय कहलाया। यह शब्द सर्वाधिक प्रचारित तब हुआ जब कई उभरते पर्यावरणीय दलों ने स्वयं को 'ग्रीन पार्टियों' के रूप में ब्रांड बनाया। यहां से यह शब्द अधिक व्यापक होकर हरित दर्शनशास्त्र, हरित राजनीति, हरित विचारधारा, पारिस्थितिकी, राजनीतिक पारिस्थितिकी, हरितवाद के रूप में पहचान बनाता गया।
हरित विचारधारा व हरित राजनीति का उद्देश्य मानव व प्रकृति के मध्य संबंधों का गहनता से चिन्तन करना है। यह विचारधारा इस विश्वास पर आधारित है कि प्रकृति मानव, गैर मानव और निर्जीव संसार का अन्तर्सम्बन्धित एकीकार है। इसने हरित विचारकों को मानवशास्त्रीय या मानव–केन्द्रित परम्परागत राजनीतिक विचारधाराओं की मान्यताओं पर सवाल उठाने के लिए प्रोत्साहित किया है। यह चिंतन इसलिए जरूरी हो गया था कि पुनर्जागरण, औद्योगिकीकरण, आधुनिकतावाद, विज्ञानवाद व पूँजीवाद ने मानव व प्रकृति के आपसी संबंधों को बिगाड़ दिया था। इन परिवर्तनों ने भोगवादी, उपभोक्तावादी व भौतिकतावादी मानसिकता पैदा की। प्रकृति के साथ रहने वाला मानव अब उसका स्वामी बन गया। जैसे जैसे औद्योगिकीकरण व शहरीकरण बढ़ा प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुंध दोहन होने लगा। परिणामस्वरूप पर्यावरण सम्बन्धी सैकड़ों समस्याओं ने विकराल रूप धारण कर लिया। इन्हीं समस्याओं के मद्देनजर हरित राजनीति एक समकालीन महत्वपूर्ण अवधारणा बन गई।[1]
परम्परागत राजनीतिक सिद्धान्त (रूढ़िवाद, उदारवाद, समाजवाद, फांसीवाद, आदर्शवाद आदि) व्यक्ति, समूह, वर्ग, राष्ट्र, परम्पराओं पर ध्यान केन्द्रित करते है। 1960 के बाद की नयी विचारधाराएँ नारीवाद, नृजातीय राष्ट्रवाद, धार्मिक कट्टरतावाद, बहुसंस्कृतिवाद आदि पहचान की राजनीति को मुख्य मुद्दा बनाते है। ये सभी विचारधाराएँ मानव केन्द्रित है जो मानववाद व मानवीय कल्याण को ही केन्द्रीय मुद्दा मानती है। इनसे भिन्न हरित विचारधारा ने नए वैचारिक क्षेत्र को उजागर किया है। इन्होंने मानव के साथ ही प्रकृति को भी उतना ही महत्वपूर्ण माना है। यह भौतिक संसाधनों के वितरण की राजनीति के बजाए 'संवेदना की राजनीति' से संबंधित है।[2]

यह विचारधारा मानव चेतना के बदलाव के माध्यम से मानव का गैर मानव के साथ संबंधों के पुनर्निर्माण पर बल देता है। इसके लिए मौलिक रूप से हमारी नैतिक जिम्मेदारियों को पुनः प्रेरित करता है। मानव–प्रकृति के अन्तर्सम्बन्धों की इस दृष्टि को अभिव्यक्ति देने के लिए, हरित विचारकों को विज्ञान के दायरे में नई अवधारणाओं और विचारों की खोज करने के लिए मजबूर किया गया और प्राचीन लोगों को धर्म और पौराणिक कथाओं के दायरे से फिर से खोजा गया है। इस क्रम में गांधी की खोज सर्वाधिक प्रासंगिक बनी।

आधुनिक हरित विचारधारा की तरह गांधी ने किसी भी पर्यावरणीय दर्शनशास्त्र या सिद्धान्त की रचना नहीं की। यहाँ तक कि उन्होंने स्वयं ने गांधीवाद जैसी शब्दावलियों को नकारा था। लेकिन गांधी मानवता के समक्ष उपस्थित समस्त समस्याओं के प्रति चिंतित थे इसलिए स्वाभाविक था कि पर्यावरण व पारिस्थितिकी से सम्बन्धित चिंताओं पर भी उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए।[3] साहित्य के क्षेत्र में राचेल कार्सन की 'द साइलेंट स्प्रिंग' (1962) को विकसित होते पारिस्थितिक संकट की ओर ध्यान आकर्षित करने वाली पहली पुस्तक माना जाता है। लेकिन गांधी ने 1909 में ही अपनी पुस्तक 'हिन्द स्वराज' में आधुनिक औद्योगिक सभ्यता के द्वारा किए जा रहे पर्यावरणीय विनाश को दर्शा दिया था।यह कोई संयोग मात्र ही नहीं है कि हरित विचारधारा के महत्वपूर्ण सिद्धान्त गहरी/गहन पारिस्थितिकी के जन्मदाता अर्ने नैस ने अपने सिद्धान्त के निर्माण में गांधी के महत्व को स्वीकारा है।

भले ही आधुनिक हरित राजनीति की केन्द्रीय विषयवस्तु में पारिस्थितिकी, समग्रवाद, सतत्ता, पर्यावरणीय नैतिकता, उपलब्धता में संतुष्टि शामिल है लेकिन यह सभी विषय गांधी विचार व गांधी जीवन शैली में इस संकल्पना के विकास से कई दशक पूर्व ही विद्यमान थे।

सभी प्रकारों के हरित विचारों का मुख्य सिद्धान्त पारिस्थितिकी है जिसे पारिस्थितिकीवाद भी कहा जाता है। यह पर्यावरणवाद से भिन्न संकल्पना है। जहाँ पर्यावरणवाद मनुष्य को केन्द्र में रखकर पर्यावरण संरक्षण की बात रखता है वहीं पारिस्थितिकीवाद प्रकृति का स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार करता है। यह मनुष्य को बचाने के लिए प्रकृति का संरक्षण नहीं करता अपितु प्रकृति को बचाने के लिए प्रकृति के संरक्षण पर बन देता है। इसमें यह माना जाता है कि मानव, पशु–पक्षी व प्रकृति में अटूट सम्बन्ध है। गांधी की दृष्टि भी मनुष्य केन्द्रितता के विपरीत थी। गांधी का प्रसिद्ध वाक्य ''पृथ्वी में सभी की आवश्यकताओं को पूरी करने की क्षमता है, लेकिन एक भी व्यक्ति के लालच की नहीं'' भी यही इंगित करता है कि प्रकृति है तो मानव है।[4] प्रकृति ही मानव जाति का पोषक है। गांधी मनुष्य को प्रकृति का ही अंग मानते थे, उसका स्वामी नहीं। वे प्रकृति मनुष्य के उपभोग के लिए है, की सोच को नकारते थे। वे मनुष्य और मनुष्येत्तर जगत के समान अधिकारों को स्वीकार करते हुए कहते हैं – ''मैं यह अवश्य मानता हूँ कि ईश्वर की सृष्टि के समस्त प्राणियों को जीने का उतना ही अधिकार है जितना हमें।''[5] यंग इंडिया में लिखते हैं –

''भविष्य के मापदण्ड में केवल मानवजाति का नहीं, समस्त प्राणि जगत् का ख्याल रखा जाएगा और जिस प्रकार अब हम धीरे–धीरे; लेकिन निश्चित रूप से इस फैसले पर आ रहे है कि यह समझना गलत है कि हिन्दू अपनी संख्या के पाँचवें हिस्से को निकृष्ट मानने पर भी उन्नति कर सकते है या पश्चिम के देश पूर्वी और अफ्रीकी राष्ट्रों को शोषित और पददलित करके उसके सहारे जी तथा उन्नति कर सकते है, उसी तरह हमें समय आने पर यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि सृष्टि के निम्नतर प्राणियों पर हमारा प्रभुत्व इसलिए नहीं है कि हम उन्हें मार डाले, बल्कि वह हमारे और उनके पारस्परिक हित संवर्धन के लिए है। मैं यह निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि ईश्वर ने उन प्राणियों को वैसी ही आत्मा दी है, जैसा कि मुझे।''[6]

मनुष्य और मनुष्येत्तर जगत् के समान अधिकारों का उपरोक्त तर्क एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय दृष्टि है।

हरित विचारधारा की विषयवस्तु का एक महत्वपूर्ण पहलू समग्रवाद है। यह दृष्टिकोण का मानना है कि प्राकृतिक संसार को केवल इसके पूरे रूप में ही अच्छी तरह समझा जा सकता है, न कि अंशों के माध्यम से। यह विज्ञान की इस आधार पर आलोचना करता है कि विज्ञान भागों में बाँटकर अध्ययन करता है व प्रत्येक भाग को स्वयं में अलग समझने का प्रयास करता है। समग्रवाद इसके विपरीत मानता है कि प्रत्येक भाग का अन्य भागों से संबंध होने पर ही अर्थ है। सभी भागों में अन्तर्सम्बन्ध खोजता है। गांधी भी अपने वैचारिक दृष्टिकोण में समग्रतामूलक दृष्टि रखते थे।

उनके लिए जीवन समग्रता में है, अतएव जीवन की बुनियाद भी एक है, उसका नियमन करने वाला नियम भी एक है। वे मानव और मानवेत्तर जगत् के एकत्व में विश्वास करते हैं जिसे उनकी अस्तित्वमूलक दृष्टि कहा जा सकता है।[7] अद्वैतवाद में विश्वास करते हुए गांधी कहते हैं ''मैं अद्वैत में विश्वास करता हूँ; मैं मनुष्य की मूलभूत एकता में भी। और केवल मनुष्यों की ही क्यों, सभी जीवधारियों की एकता में भी विश्वास करता हूँ इस कारण मेरा तो ऐसा यकीन है कि एक मनुष्य के अधः पतन के साथ काफी हद तक सारे संसार की अधोगति होती है।''[8] यंग इंडिया में लिखते है – ''मैं केवल मानवों के साथ ही तादात्मय अथवा बंधुत्व स्थापित करना नहीं चाहता अपितु पथ्वी पर रेंगने वाले कीड़ों – मकोड़ों के साथ भी तादात्म्य अथवा बंधुत्व स्थापित करना चाहता हूँ।... क्योंकि हम सभी उसी ईश्वर की संतान है और इसलिए जीवन जिस रूप में भी दिखाई देता है, तत्वतः एक होना चाहिए।''[9]

पर्यावरणीय सतत्ता हरित विचारधारा का अन्य पहलू है। इसका अर्थ है पर्यावरण को पुनर्जीवित करने की क्षमता और लोगों की उनके जीवन स्थिति पर नियंत्रण की क्षमता को बनाए रखना। भावी पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करना। पर्यावरणीय सतत्ता के विचार में गांधी को दो तरीकों से खोजा जा सकता है। सबसे पहले सरल जीवन और उच्च सोच की उनकी जीवन–शैली जिसमें प्रकृति से कम से कम संसाधनों को लिया जाता है दूसरा समाज के सभी क्षेत्रों को संसाधनों की उपयुक्त उपलब्धता विशेषकर ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को। गांधी का ट्रस्टीशिप का विचार सतत्ता का सबसे बड़ा समर्थक है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने संसाधन को ईश्वर व समाज के स्वामित्व के साथ प्रयोग करता है। यह मनुष्य के लालच को नियंत्रित करने वाला सिद्धान्त है। यह कहता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने संसाधनों का प्रयोग सभी के हित में ही करना चाहिए। इसी प्रकार गांधी का सर्वोदय, अपरिगृह, स्वराज, स्वदेशी का विचार भी पर्यावरणीय सतत्ता का पोषक रहा है। गांधी का जीवन जीने का तरीका यह दर्शाता है कि उन्होंने लालच और विलासिता के बजाए आवश्यकता और संयम के माध्यम से जीवन जिया जो कि व्यक्तिगत स्तर पर पर्यावरणीय सतत्ता का अनुपम उदाहरण है।[10]

वर्तमान में सतत्ता के विचार को व्यवहार में अपनाने को लेकर दो तरह के विचार सामने आए है। सुधारवादी व आधुनिक पारिस्थितिकविद कमजोर सतत्ता के समर्थक है जो संसाधनों के भरपूर उपयोग के द्वारा आर्थिक विकास तो चाहते हैं लेकिन धीमी गति से। वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण के लिए सतत विकास के जो भी प्रयास हो रहे है वह इस स्वरूप के नजदीक है। दूसरी तरफ मजबूत सतत्ता के समर्थक प्राकृतिक पूंजी के संरक्षण के समर्थक है और आर्थिक विकास के प्रति आलोचक। ये प्रकृति की ओर पुनः लौटने के समर्थक हैं। सामाजिक पारिस्थितिकविद,

गहन पारिस्थितिकविद और गांधी इस दूसरे सतत्ता स्वरूप के नजदीक है।

हरित विचारधारा परम्परागत नैतिक व्यवस्था के आधार को परिवर्तित करती है। पहले नैतिक व्यवस्था मानव केन्द्रित थी जिसमें मानव के सुख, आवश्यकता, आनंद पर ध्यान केन्द्रित था। हरित विचारधारा गैर मानव संसार के सुख–दुख, भावनाओं को भी लेती है। जैसा कि पीटर सिंगर ने जानवरों के अधिकारों की बात की। मनुष्य की तरह जानवर को भी दर्द का अहसास होता है। वे भी शारीरिक दर्द से बचना चाहते हैं। इसी क्रम में गांधी पेडों तक में जीवन देखते हैं। वे कहते हैं कि पेड़ भी हमारी तरह है। वे साँस लेते है, खाना खाते है, पानी पीते हैं उसी तरह सोते भी हैं। इसलिए रात में उनके सोने के समय पेड़ की पत्तियाँ तोड़ना गलत है और पत्तियाँ भी उतनी ही लेनी चाहिए जितनी की वास्तविकता में जरूरत हो। गांधी के विचार व जीवन शैली में पर्यावरणीय नैतिकता हर कदम पर थी। गांधी ने अहिंसा के अपने राजनीतिक विचार को पर्यावरणीय हिंसा से बचाव का साधन बनाया।

'फ्राम हेविंग टू बीईंग' उपलब्धता में संतुष्टि का हरित विचारधारा का पहलू इस विचारधारा को आकार देता है। इसने मानव भलाई और प्रसन्नता के आधार को बदल दिया। एरिक फ्रॉम ने कहा कि हमारे पास जो है, हमें उसी में सुखी रहना चाहिए। भौतिकवाद व उपभोक्तावाद ने मानव की प्रसन्नता को अधिकाधिक संसाधनों के संग्रहण से जोड़ दिया है। यही पर्यावरण विनाश की जड़ है। इसने मानव को असंतुष्ट प्राणी बना दिया है। यहां इस विचार पर गांधी का प्रभाव स्पष्ट दिखता है। गांधी भी सुखी रहने के लिए अपनी जरूरतों को कम से कम रखने पर बल देते थे। वे उपभोक्ता संस्कृति के स्थान पर तप आधारित जीवन पद्धति को अपनाते है जहाँ अल्प संसाधनों के उपयोग द्वारा अधिक संतुष्टि प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। गांधी ने तो हरित विचारधारा आने से इतने समय पहले ही अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज में आधुनिक औद्योगिक सभ्यता को शैतानी सभ्यता तक कह दिया था। यह औद्योगिकीकरण मानव को प्रकृति से अलग करके प्रकृति को उपभोग की वस्न बना देता है। यह व्यवस्था प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन पर टिकी है। यदि गांधी के कम संसाधनों में सुखी रहने की जीवन शैली का दर्शन करना हो तो उनके आश्रम जीवन को देखें जहाँ प्राकृतिक जीवन शैली, कुदरती इलाज का दर्शन, अहिंसक वस्तु, प्राकृतिक आहार, जैविक खेती के न्यूनतम संसाधनों के साथ सफल सुखद जीवन जीया जाता था।[11]

विचारधारा समान विचारों का समुच्चय होता है जो किसी विशेष उद्देश्य के लिए समर्पित होता है। परम्परागत राजनीतिक विचारधारा उदारवाद, समाजवाद, रूढ़िवाद, आदर्शवाद विशेष पहलूओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। दूसरी तरफ राष्ट्रवाद, नारीवाद, बहुसंस्कृतिवाद की विचारधारा क्रॉस कटिंग विचारधाराएँ कहलाती है जो स्वयं के मुख्य विषय के साथ अन्य विचारधाराओं के पहलुओं को भी साझा करती है। हरितवाद या हरित विचारधारा को भी इस दूसरी श्रेणी में रखना उचित होगा। लेकिन यह भी दूसरी श्रेणी की विचारधाराओं से इस रूप में भिन्न है कि वे मानव केन्द्रित है जबकि यह प्रकृति केन्द्रित हरित विचारधारा ने संकल्पनाओं के स्तर पर स्वयं को आधुनिकतावादी, पारिस्थितिकी, सामाजिक पारिस्थितिकी, उग्र पारिस्थितिकी व गहन पारिस्थितिकी के तहत विकसित किया है। इन संकल्पनाओं में गांधी के विचारों का समावेश व प्रभाव को जानना अध्ययनकर्ताओं के लिए एक नया व दिलचस्प विषय रहा है। गांधी ने ऐसे समय में पर्यावरण समस्या पर विचार रखे जबकि पर्यावरण संकट की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान तक नहीं हुई थी। भले ही हरित विचारधाराओं के सिद्धान्तों का उदय 1970 के दशक के बाद हुआ है लेकिन उनमें गांधी के विचारों का समावेश स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

वर्तमान में अधिकांश पर्यावरणीय दबाव समूह तथा मुख्यधारा की राजनीतिक पार्टियों के द्वारा अपनाये गयी 'आधुनिकतावादी पारिस्थितिकी' पर्यावरणवाद की सुधारवादी धारा है। यह अंधाधुंध विकास को सतत विकास की ओर ले जाती है लेकिन पूंजीवाद और आधुनिकतावाद के पहलू व्यक्तिवाद, भौतिकतावाद, आर्थिक विकास व स्वतंत्रता के मूल्यों का समर्थन करती है। यह मानव को केन्द्र में रखकर पर्यावरण संरक्षण की बात करती है। पर्यावरणीय समस्याओं का बाजार आधारित समाधान करती है। यह ग्रीन टेक्नोलॉजी, पर्यावरण संवहनीय उत्पादों का निर्माण, ग्रीन हाउस गैसों का कम उत्सर्जन, कॉर्पोरेट उत्तरदायित्व से पर्यावरण संरक्षण का कार्य करती है।[12] यहाँ पर तकनीक, संस्थाओं, सरकारों के द्वारा पर्यावरण को बचाने का प्रयास है जबकि गांधी व्यक्ति के स्तर पर प्रयासरत थे। गांधी व्यक्ति में सेवा के प्रति निरपवाद समर्पण के द्वक्षरा प्रकृति की रक्षा करते हैं। वे प्रकृति के प्रति अधिकारपूर्ण रवैये के बजाए प्रत्येक व्यक्ति को मनुष्य व गैर प्राणियों के प्रति कर्त्तव्य को सिखाते हैं।

हरित विचारधाराओं के स्तर पर देखा जाए तो गांधी सामाजिक पारिस्थितिकी और गहन पारिस्थितिकी के सर्वाधिक नजदीक दिखाई देते हैं। सामाजिक पारिस्थितिकी शब्द अमेरिका के पर्यावरणवादी मरे बुकचिन द्वारा गढ़ा गया है। इस दृष्टिकोण के तहत यह माना जता है कि पर्यावरणीय संकट का कारण मौजूदा सामाजिक संरचनाएँ हैं। अतः पर्यावरणीय संरक्षण के लिए इन सामाजिक संरचनाओं में आमूलचूल परिवर्तन आवश्यक है। समाजवादी इसके लिए पूंजीवादी संरचनाओं को, अराजकतावादी राज्य संरचना को व नारीवादी पितृसत्तात्मक संरचना का नाश चाहते हैं।[13] गांधी भी आधुनिक औद्योगिक सभ्यता का नाश चाहते हैं। वे भौतिकतावादी पागलपन की दौड़ और आधुनिक विकास के मॉडल का नाश चाहते है। वे समाज में व्याप्त उपभोक्ता संस्कृति का नाश चाहते हैं। उनका मानना है कि यह उपभोक्ता, औद्योगिक सभ्यता ही है जिसने मानव को मानव व प्रकृति दोनों से अलग कर दिया है। अतः व्यक्ति की जीवन शैली, सरकार के विकास के स्वरूप के आमूलचूल परिवर्तन के समर्थक है।

सामाजिक पारिस्थितिकी ने तीन अलग–अलग धाराओं में अपना विकास किया है। पहला पारिस्थितिकीय समाजवाद है जो कि मार्क्सवाद से जुड़ा हुआ है। इसका मूल विचार यह है कि पूंजीवाद पर्यावरण का दुश्मन है जबकि समाजवाद मित्र है। रुडोल्फ बहरो का तर्क है कि पर्यावरण संकट का मूल कारण पूंजीवाद है। पूंजीवादी व्यवस्था भौतिकवाद, उपभोक्तावाद व धन की भूख को प्रेरित करती है अतः पूंजीवाद के खिलाफ सामाजिक क्रांति आवश्यक है। इनका मानना है कि यदि धन का स्वामित्व सभी के पास है तो इसका उपयोग सभी के हितों में किया जा सकेगा। गांधी अलग अर्थों में समाजवादी थे। वे समाजवाद को अद्वैतवाद से जोड़ते थे। वे राजा–प्रजा, धनी–गरीब, मालिक–मजदूर को बराबर बनाने के लिए समाजवाद का समर्थन करते हैं। उनका समाजवाद पूंजीवाद के विरोध के रूप में नहीं पनपा था। लेकिन पारिस्थितिकीय समाजवाद ने पूंजीवाद की आलोचना के जो आधार दिए है उन सभी से गांधी सहमत थे। वे पूंजीवाद के अनिवार्य पहलू भौतिकतावाद, उपभोक्तावाद, पूंजी का केन्द्रियकरण के कठोर आलोचक थे। लेकिन पूंजीवाद के अंत के लिए यह मार्क्सवाद की तरह हिंसा के प्रयोग का समर्थन नहीं करते। वे भी मार्क्सवाद की तरह पर्यावरण संरक्षण के लिए निजी सम्पत्ति की संस्था को मिटाना चाहते थे लेकिन उसके लिए गांधी ने अपरिगृह और ट्रस्टीशिप के अहिंसक साधनों का सहारा लिया।[14] वे संसाधनों का समाज में न्याय–सम्मत वितरण और व्यक्तियों के द्वारा अपनी आवश्यकता से अधिक संसाधनों को समुदाय के हित में स्वेच्छापूर्वक त्याग देने की तत्परता के सामाजिक अर्थशास्त्र के आधार पर पर्यावरण समस्या का समाधान

देते हैं।

विचारधाराओं में सर्वाधिक पर्यावरण संवेदनशीलता का दावा अराजकतावाद का ही है। यह सामाजिक पारिस्थितिकी की दूसरी धारा है। ये ऐसा राज्यविहीन समाज चाहते हैं जिसमें आपसी सद्भाव, सम्मान, भातृत्व व विधिता का गुण हो। इनका मानना है कि प्रकृति में संतुलन व सामन्जस्य का स्वाभाविक गुण पाया जाता है। इसको नियंत्रित करने के लिए किसी वहाँ सत्ता या नियंत्रण की आवश्यकता नहीं है। ये ऐसे विकेन्द्रीकृत समाजों का निर्माण करना चाहते हैं जो आत्मनिर्भर होगें तथा कृषि, शिल्प व लघु उद्योगों पर आश्रित होंगे। इनका मानना है कि विकेन्द्रीकरण से पर्यावरण का बुद्धिमानी एवं प्रेमपूर्वक रक्षण होगा। गांधी को दार्शनिक अराजकतावादी कहा जाता है। गांधी व्यक्ति पर किसी भी बाहरी नियंत्रण को स्वीकार नहीं करते। वे अराजकतावाद को व्यक्ति के नैतिक एवं आध्यात्मिक स्वभाव के कारण स्वीकार करते थे। उनके अनुसार, मनुष्य ईश्वर का ही एक अंश है। वह जीवन में सदाचारों का पालन करते हुए पूर्ण मनुष्य के रूप में विकसित होगा और ऐसे सत्यागृही एवं अहिंसक व्यक्ति का, दूसरे व्यक्तियों व प्रकृति के अन्य तत्वों से संघर्ष नहीं होगा। गांधी ने ग्राम को आर्थिक विकेन्द्रीकरण की व्यावहारिक इकाई बनाकर श्रम प्रधान उद्योगों द्वारा स्थानीय स्तर पर उत्पादन और वितरण को सुनिश्चित किया। उन्होंने खादी को भी उत्पादन और वितरण के विकेन्द्रीकरण के प्रतीक के रूप में अपनाया।[15] कहा जा सकता है कि गांधी सामाजिक पारिस्थितिकी की इस दूसरी धारा से काफी वैचारिक समानता रखते थे।

सामाजिक पारिस्थितिकी की तीसरी धारा पारिस्थितकीय नारीवाद पर्यावरण विनाश की उत्पत्ति 'पितृसत्ता' को बताती है। इनका मानना है कि प्रकृति को खतरा मानव जाति से नहीं, बल्कि पुरूषों व पुरूष प्रभुत्व से है। पुरूष स्वयं को प्रकृति व स्त्री दोनों का स्वामी मानता है। गांधी का भी मानना था कि स्त्री को अपना मित्र या साथी मानने के बदले पुरूष ने अपने को उसका स्वामी माना है। लेकिन गांधी पुरूष के पुरूष प्रभुत्व को ही प्रकृति के लिए खतरा नहीं बताते। हालांकि वे पारिस्थितकीय नारीवाद की तरह नारीवादी मूल्यों पारस्परिकता, सहयोग व पोषण को समाज व प्रकृति के संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। महिला व प्रकृति में अटूट संबंध को भारत ने अमृता देवी, चिपको आंदोलन की गौरा देवी के त्याग व समर्पण से देखा है। अमृता देवी व गौरा देवी ने गांधी के ही सत्याग्रह की रणनीति को अपनाया। भले ही अमृता देवी के समय में गांधी जन्में न हो लेकिन उन्होंने जिस त्याग, समर्पण व तकनीक का प्रयोग किया उसको चरम सीमा तक गांधी ने पहुँचाया।

हरित विचारधारा में गहरी पारिस्थितिकी (डीप इकोलॉजी) के प्रणेता अर्ने नेस ने स्वीकारा है कि उन्होंने पारिस्थितिकी के इस दर्शनशास्त्र को गांधी व स्पिनोजा के अध्ययन से प्रभावित होकर रचा है। यह विचारधारा स्वीकार करती है कि प्रकृति का स्वयं का मूल्य है। प्रकृति मात्र मनुष्य के उपभोग के लिए नहीं अपितु स्वयं के स्वतंत्र अस्तित्व की वजह से मौजूद है। यह मानव को प्रकृति का स्वामी नहीं बल्कि उसका एक अंग मानती है। नेस के अनुसार प्रत्येक प्रजाति के पास जीने व मुस्कुराने का समान अधिकार है। यह प्रकृति के सभी अंशों में विद्यमान समग्रता को स्वीकार करती है। यह सभी व्यक्तियों में पारिस्थितिकीय चेतना को उत्पन्न करना चाहती है। यह तभी संभव है जब व्यक्ति स्वयं के सर्वोच्च होने के अहंकार से मुक्त हो। जब व्यक्ति के स्तर पर चेतना को जागृत करने का प्रश्न हो तो भला गांधी तक कौन नहीं जाएगा। गांधी सिर्फ देश की आजादी के लिए प्रयासरत नहीं थे अपितु प्रत्येक व्यक्ति की नैतिक चेतना को जागृत करने के लिए भी संघर्षरत थे। यह मात्र संयोग नहीं है कि इतने दशकों बाद अर्ने नेस ने गांधी विचार को पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में स्वीकार किया। गांधी ने इतने समय पहले ही मानव के समान ही समस्त प्राणियों को जीने के अधिकार का समर्थन किया। गांधी तो पृथ्वी के छोटे–छोटे प्राणियों से भी तादात्म्य स्थापित करना चाहते थे। मनुष्येतर जगत् के संरक्षण के लिए प्राण न्यौछावर करने के लिए भी तैयार थे। गहन पारिस्थितिकी का विचार आया तब भले ही गांधी जीवित न हो लेकिन उन्होंने ताउम्र इस विचार को जीया था।[16]

गांधी को भारत में पर्यावरण आंदोलन का जन्मदाता कहना या समय से पहले का पारिस्थितिकीविद् कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा। हरित विचारधारा की सभी विषयवस्तु में गांधी है; हरित विचारधारा की सभी धाराओं में गांधी का प्रवाह है। सामाजिक पारिस्थितिकी और गहन पारिस्थितिकी के विचार तो गांधी विचार ही प्रतीत होते है। आज भी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण के लिए किए जा रहे सत्याग्रहों और सत्याग्रहियों को गांधी की अहिंसा, सत्याग्रह ही दिशा दिखा रहे हैं। भले ही गांधी ने स्वयं को विचारधारा के दायरे में नहीं बाँधा लेकिन मानवता के स्तर को बढ़ाने वाली हर विचारधारा में गांधी है। यही बात हरित विचारधारा पर भी सिद्ध होती है।

संदर्भ सूची

1. एण्ड्रयू हेयवुड़, पॉलिटिकल आइडियोलॉजी : एन इंट्रोडक्शन, पलग्रेव पब्लिकेशन, लंदन 2017, पेज 329–330
2. पूर्वोक्त, 332–334
3. सीबी के. जोसेफ व भारत महोदय, गांधी, एनवायरमेंट और ससटेनेबल फ्यूचर, गांधी पीस फाउण्डेशन, नई दिल्ली, 2011, पेज 4,5.
4. विवेकानन्द तिवारी, पर्यावरण, स्वच्छता और गांधी, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019, पेज 71
5. हरिजन, 09/01/1937, पेज 286
6. यंग इंडिया, 17/12/1925, पेज 440
7. शम्भू जोशी व मिथलेश, गांधी दृष्टि के विविध आयाम, राजकमल प्रकाशन, 2020, नई दिल्ली, पेज 152
8. यंग इंडिया, 04/12/1924, पेज 398
9. यंग इंडिया, 04/04/1929, पेज 107
10. टी.एन. खोशू व जॉन एस. मूलाक्कट्टू, महात्मा गांधी एण्ड द एनवायरमेण्ट, द एनर्जी एण्ड रिर्सोसेज इन्स्टीट्यूट, 2012, नई दिल्ली, पेज 64–76
11. आर.के. प्रभु व यू.आर. राव, महात्मा गांधी के विचार, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 1994, पेज 221–223
12. एण्ड्रयू डॉब्सन, ग्रीन पॉलिटिकल थोट, रोउटलेज प्रकाशन, लंदन, 2000, पेज 149–153
13. रामचंद्र गुहा, उपभोग की लक्ष्मण रेखा, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, 2013, पेज 48
14. महात्मा गांधी, मेरे सपनों का भारत, राजपाल एवं सन्स, नई दिल्ली, 2019, पेज 24–28
15. रामचन्द्र गुहा, एनवायरमेन्टलिज्म : ए ग्लोबल हिस्ट्री, पेंगुइन बुक्स, नई दिल्ली, 2014, पेज 29–34
16. आर.सी. शर्मा, गांधीयन एनवायरमेन्टलिज्म, ग्लोबल विजन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2013, पेज 45–61